श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

अंक 1 जनवरी 2015, कुल पृष्ठ 16

चाहे कितना भी तेजाधारी हो बिना भजन (नाम, जाप) के मर जाएगा–गुरुवर लक्ष्मीनारायण

मूल्य मात्र 10 रू

3 मैं 250 रुपये दे देती तो साढ़े तीन लाख बच जाते

सबको मुझसे चाहिए
इसलिए
मुझको सबसे चाहिए
8

क्या है श्री कल्कि बाल वाटिका एवं श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन में अब अंतर 9

मैं सिर्फ कल्कि जी का हूँ, उधार की जिंदगी जी रहा हूँ 11

यह भगवान कल्कि जी की माया है भाई सो बोल–कबोल लिख कर रखें भाग—2
वर्ना सेठ जी की तरह मन बदल जाता है

10

अचानक अमरीका में job lay-off पे,कैसे कल्कि जी ने की मेरी रक्षा 2

जब कल्कि जी ने आमदनी में एक प्रतिशत नहीं पाँच प्रतिशत शेयर मांगा 13

कल्कि जी की छावनियाँ

* कोलकाता * मयूर विहार
* पटना * सम्भल-सूर्य कुंड-भुवनेश्वर

11 यही जो है जिंदगी की तरह कल्कि जी ने पैसा वसूला

पटना में गंगा जी के कलक्ट्री घाट पर माँ तारापुर मंदिर
भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना
17-18 जनवरी 2015
संपर्क : श्री महेश बंसल (9431459545), मामाजी (9136377829)

12 पढ़े लिखों के लिए भी श्री कल्कि जी के अनुभव उपचार कितने सार्थक हैं

16 बड़े पर्दे पर पहली बार देखें, सुनें, गाएं भगवान श्री कल्कि एवं माँ दुर्गा की चौकी

Catch us on air! 92.7 BIG FM SUNO SUNAO, LIFE BANAO!

सहर रेडियो चैनल पर कल्कि जी के भजन हर बुधवार और शनिवार को प्रातः 5 से 7 बजे

* बेखबर जाग जरा दिन निकलने वाला है * भूमि का उतारो भार * श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ कल्कि रूप में * दुर्गा स्तुति
* स्वांस में सुमिरन समा गया * कलियुग केवल नाम आधारा * आओ सुनाएं हनुमान की कथा * हे काल रूप कल्कि प्यारे
* तेरा जीवन बिरथा बीत गया

भगवान श्री कल्कि के इन दस भजनों में से दो भजन हर बार चलाए जा रहे हैं।

सुश्री पारूल गुप्त–अमित गुप्त–.
9910003910

Kalki Group (Real) has been transformed. Have a look @ www.facebook.com/shreekalki

अचानक अमरीका में job lay-off पे, कैसे कल्कि जी ने की मेरी रक्षा

— सुश्री श्रेया चौधरी (USA)+1(267) 243-6643

प्रिय कल्कि भक्तों, आइये आज हम एक ऐसा किस्सा सुने जिससे कल्कि जी की महिमा का छोटा सा वर्णन है। करीबन 7 साल पहले, अगस्त 2007 में जब मैं Philadelphia USA थी तो एक दिन हठात मेरे कम्पनी से मेरा lay-off हो गया। USA की अर्थव्यवस्था सड़के चूम रही थी, और मैं एक दो हफ्ते से अफवाह भी सुन रही थी कि मेरी कम्पनी धीरे-धीरे लोगों को निकाल कर शायद बंद ही हो जाए। मैंने सोचा कि कम्पनी पूरी तरह बंद भी हो तो उसमें कम से कम एक साल तो लगेगा, ऊपर से मैं one of the top performers, तो मेरी बारी तो देरी से आएगी। खैर जिन्दगी ने कुछ और सोच रखा था मेरे लिए।

मेरे मैनेजर के साथ मेरी साप्ताहिक मीटिंग थी जिसमें हम अपने हाल-चाल के बारे में चर्चा करते हैं। मीटिंग में उसने मेरे lay-off की खबर सुनाई। सुनकर मेरा सर ऐसा घूमा मानो लगा कि उस कमरे की छत्त ही मेरे ऊपर गिरने वाली है।

दोस्तों, USA के immigration laws के अनुसार नौकरी जाते ही, दूसरे दिन से अमरीका में मेरा रहना गैर कानूनी हो जाता है। अमरीका के कानून के हिसाब से अगले दिन ही मुझे इस देश में अपना घर छोड़कर, सब कुछ छोड़, अपना समान बांधकर भारत लौट जाना है। कोई भी नई नौकरी ढूंढने में कम से कम 2-3 महीने लगते हैं, और ऊपर से उस समय अमरीका की अर्थव्यवस्था बुरी थी। मैंने रो-रोकर अपना हाल बेहाल कर लिया था।

मैंने अपने पिता को फोन किया और सारा किस्सा सुनाया। मेरे पिता ने कहा कि मैं बिलकुल मस्ती में खाऊँ, पीऊँ और फिक्र ना करूं, कल्कि जी जो करेंगे वह बहुत अच्छा करेंगे वर्ना कोलकाता आजा यहाँ नौकरी तलाश कर लियो। मैंने अपने कुछ immigration lawyers दोस्तों से बात की तो समझ में आया कि हालाँकि कानून अगले दिन अमरीका छोड़ने का है, लेकिन वास्तव में इसका मतलब यह है कि मेरा एक भी महीने का pay check miss नहीं होना चाहिए। USCIS department के records में जब तक हर महीने मेरे नौकरी से मिले हुए pay check entry हो रही है, तब तक मेरा अमरीका में रहना कानूनी है।

अब प्रश्न यह था कि 1-2 हफ्ते में मैं नौकरी कहा से लाऊँ कि जो अगले महीने एक pay check मेरे हाथ में हो। यह तो हथेली पर सरसों उगाने वाली बात हो गई और कोई चमत्कार ही भारत वापिस जाने से मुझे रोक सकता था। फिर मैंने मामाजी (हमारे कल्कि मंडल के president) से बात की। मैं उन्हें अपने स्वप्नानुभव सुनाती थी जिसमें आसमान में उड़ने वाला स्वप्नानुभव भी सुनाया हुआ था।

मामाजी ने कहा कि मैं अपने कम्पनी के president से जाकर बात करूं कि चाहे पैसे मेरे पास आये या नहीं, लेकिन records मे मेरा pay check कटना चाहिए। मैंने कहा कि ''मामाजी यह अमरीका है, यहाँ यह सब आपके भारत वाला गोल-माल नहीं होता। मेरी कम्पनी का president नहीं मानेगा।'' मामाजी ने कहा कि जब मैं तुम्हारे से कह रहा हूँ तुम एक बार जाओ और मालिक से बात तो करो, और साथ ही उन्होंने 2-3 संकल्प/प्रार्थना बता दिए। मैं कल्कि जी के पीछे लग गई कि वह मेरी रक्षा करें। मेरे पिता ने यह भी बताया कि मैं यह संकल्प करूं कि नई नौकरी में मेरी तन्ख्वहा में जो भी बढ़ौतरी होगी, उसका 0.1, 1 या 5% मैं कल्कि जी के प्रोजेक्ट के नाम के निकालूँगी। मैंने 5% का संकल्प किया। सारे संकल्प, उपचार करके अगले दिन मैंने अपनी कम्पनी के president से बात की। उसने सीधे से कहा कि ऐसा तो हम करते नहीं हैं। फिर कल्कि जी ने मुझसे 2-3 बातें बुलवाईं और जो हमारे बीच बातचीत हुई, अंत में मेरी कम्पनी के president ने कहा कि ठीक है जब तक मुझे नौकरी नहीं मिल जाती, करीबन 3 महीने तक मेरी कम्पनी मुझे on records employed रखेगी।

श्रेया चौधरी (USA)

मेरी सांस में सांस आई और चेहरे पर मुस्कान। मेरे कल्कि जी ने मुझे एक सुरक्षा कवच प्रदान कर दिया। फिर मैंने पूरी लगन और मेहनत के साथ नौकरी की तलाश शुरु कर दी। दोस्तों, 3 हफ्ते में मेरे हाथ में 2 बड़ी कम्पनियों में नौकरी का नियुक्ति पत्र था। एक तो Philly में ही था और दूसरा Boston जैसे सुन्दर और नामी शहर में। कहते हैं "sometimes beggars can not be choosers" लेकिन मेरे कल्कि जी ने इस परिस्थिति में भी मुझे राजा-रानी की तरह रखा। मैं अगर और ढूंढती तो शायद कल्कि जी नौकरियों की लाईन लगा देते।

क्योंकि मेरे पास 3 महीने का वक्त था, मैंने सोचा, क्यों न थोड़े दिन छुट्टियाँ मनाई जाएं? मैंने अपनी नई कम्पनी को डेढ़ महीने के बाद की joining date दी। उस दौरान मेरी बहन भी अमरीका आ रही थी। तो जब सोमवार सुबह सब लोग काम पर जाते तो मैं आराम से देरी से उठती और फिर अपनी बहन के साथ Philadelphia की अच्छी जगाहों पर लंच और सुन्दर सड़कों की सैर करती। इस पूरे प्रकरण के दौरान ऐसी कई राते थीं जब मैं रोती, मुझे बहुत डर लगता, कहाँ नौकरी मिलेगी? कैसे मिलेगी? इत्यादि। मानो मेरे कल्कि जी ने कहा की रानी, बहुत परिश्रम कर लिया, अब नई नौकरी शुरु करने से पहले थोड़े दिन जिन्दगी तो जी ले।

मेरी नई कम्पनी ने मुझे Boston में घर ढूंढने में पूरी मदद की और मेरे Philadelphia से Boston जाने का पूरा खर्च उठाया। आज सात साल हो गए इस कम्पनी में मुझे, और मेरे कल्कि जी ने मुझे कम से कम 8 बार हुए lay-offs में मेरी रक्षा की है। (एक lay-off जिसमें मेरा कम्पनी के 40% लोगों को निकाला गया) कोई तीसरा इंसान मेरी यह कहानी सुनकर शायद मेरे हौंसले, लगन और कामयाबी के गुण गान कर सकता है, लेकिन मैं तो कहूँगी कि मेरे कल्कि जी मुझे अपनी पलकों पर बैठाकर Philadelphia से Boston ले आए और आज भी राजा -रानियों की तरह Boston में रखे हुए हैं।

मानू मैं न मानू

मैं 250 रुपये दे देती तो साढ़े तीन लाख बच जाते

—सुश्री मेघना गोयल 9136377829

मेघना गोयल

मैं संभ्रान्त, सात्विक परिवार में पैदा हुई। बी.ए. पास कर, सन् 1993 में मैं शादी करके, सन् 1995 में श्री कल्कि परिवार में आई। लेकिन जरा मैं बचपन से ही जिद्दी स्वभाव की रही। जब तक मेरा अन्तष्करण किसी भी बात को स्वीकार नहीं करता है तब तक मैं उस बात को स्वीकार नहीं करती हूँ। ब्रह्मलीन श्री रामेश्वर दास ज्योतिषी जी (भाई जी) के मुखारबिन्द से मैंने प्रभु श्री कल्कि जी की बहुत सी रहस्यमयी लीलाएं सुनी थीं। मुझे पढ़ने लिखने का शौक बचपन से ही था सो उनके द्वारा मुझे प्रदान श्री कल्कि पुराण को माँ सरस्वती की कृपा से मैंने पहली ही बार में 151 छन्दो में (गायन पद्यति) में लिखा। यही 151 छन्द श्री हरि कथा श्री कल्कि पुराण विशेषांक में 1997 अंक में छपे हैं। भाई जी के बाद भगवान श्री कल्कि ने मुझे स्वप्नानुभव में ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी से साक्षात्कार कराया। यहीं मैं भाई साहब (मामाजी) से सम्पर्क में आई जिन्हें बस बच्चे ही बच्चे सुहाते हैं। मैं भी उनके साथ बच्चों में ऐसी लिप्त हुई कि मुझे मालूम ही न चला कि देखते ही देखते कब 17 वर्ष बीत गये। तब से कलियुग ने अनेको बार मुझे बड़ी से बड़ी परेशानियों में गेरा और श्री कल्कि जी ने अपनी अनुभव (स्वप्न-जागृत-वाणी-मानसिक) लीलाओं द्वारा अपनी अनुभूति करा कर मुझे कलियुग की काली दलदल से बाहर निकाला। पता नहीं कैसे कैसे मेरे जिद्दी स्वभाव के कारण मेरे भक्ति के अहंकार का पौधा मेरे हृदय में अपनी जड़े जमा गया।

मैं मामाजी की बातें मानती जरूर थी लेकिन स्वाभाविक रूप में उनकी कही हुई कई बातें मुझे अच्छी नहीं लगती थीं। मैं कई बार उनसे कई तरह के प्रश्न करके संतुष्ट होने का प्रयत्न भी करती थी लेकिन उनके सही भाव लेकिन अतराशे शब्दों से मैं संतुष्ट नहीं हो पाती थी। उनके बताने समझाने के तरीके को मन स्वीकार ही नहीं करता था। उदाहरणार्थ मामाजी कई बार कठोर शब्दों में मुझ से कहते थे, 'शक्तियों को भाग चाहिए' यह बात मेरी समझ से बाहर हो जाती थी। हालांकि औरों को तो यह बात मैं अच्छी तरह से समझाने में सफल होती थी पर स्वयं को समझाने में असफल रही। मामाजी कल्कि भगवान का शुभ का हिस्सा देने की बात बार-बार कहते थे। यह मैंने उनके कहे अनुसार पत्रिका में तो बहुत बार छापा भी पर स्वयं पर कभी लागू नहीं किया। क्योंकि मेरा मन स्वयं को कल्कि जी का बहुत ही खास समझता आया और शायद मामाजी की इन सब बातों से मैं अपने आप को अलग समझती रही।

मैंने भाई साहब से अनेकों बार मुझसे ही नहीं औरों से भी कहते सुना कि हमारे शास्त्र लुप्त हो गए हैं। यह अनुभव सिर्फ दृष्टा के लिये ही नहीं हैं यह समाज के लिये हैं इन्हें छपवायें, इन्हीं से ग्रन्थ बनेंगे-सच्चे भक्त समाज को रास्ते मिलेंगे। अब लगता है इसी छटपटाहट में उन्होंने स्वप्नानुभव एक सम्पदा नोएडा में कई पैनल मैम्बरों द्वारा मिलकर 5 जनवरी 2013 को श्री कल्कि जी की कृपा से कल्कि इवेन्ट में आगंतुकों एवं कल्कि भक्तों में बाँटी।

मैक्स अस्पताल पटपड़गंज

(आज दोस्तों पिछले 25 दिनों से 20 नवम्बर 2014 से 15 दिसम्बर 2014 के बीच में मेरे साथ जो-जो घटित हुआ है यथार्तता को समझती हुई बता रही हूँ ताकि जिन्हें श्री कल्कि जी समय-समय पर तबाही से बचाना चाह रहे हैं वह बच जावें।)

पिछले एक साल से मुझे बुरे-बुरे अनुभव आ रहे थे जिनके उपचार-प्रार्थनाएं मैं नियमित तौर पर किताब में देखकर यदा कदा मामाजी से पूछकर कर देती थी।

अनुभव —20 नबम्बर 2014 की पत्रिका डिजाईन करते हुए राजन चौधरी (कोलकाता) की आपबीति में दस महाविद्याओं में से माँ धूमावति की फोटो इंटरनेट से निकाली। वह मुझ से शेयर मांगने लगी। पहले मैंने इसे मन का भ्रम और भय समझा लेकिन तीन दिन तक मेरे दिमाग पर हथौड़े से बजते रहे 'मेरा कर, मेरा कर'। जैसा पहले मैंने बताया है मुझे भी जिद्द चढ़ जाती है कि यह क्या बात हुई कि कल्कि साहित्य का काम करते हुए जिस देवी-देवता का चित्र पत्रिका की सुंदरता बढ़ाने के लिये निकालो वही एक्टिवेट होकर मुझसे शेयर क्यों मांगे? मैं इसके भयंकर परिणाम जानते हुए भी श्री कल्कि जी की अहैतूकि कृपा न समझकर इसे नजर अंदाज कर गई और जिद्द पने में मामाजी को 7 दिसम्बर तक भी कुछ नहीं बताया।

अनुभव —24 नवम्बर 2014 को पूरी रात बैठकर कल्कि जी की मासिक पत्रिका का कम्प्यूटर पर काम किया। पता नहीं कौन सा बटन दब गया कि मासिक पत्रिका का सारा मैटर डिलीट हो गया और साथ ही मेरा कम्प्यूटर भी खराब हो गया।

मैं पलंग पर जाकर लेट गई तब मुझे तीन लोग दिखे जो अब जीवित नहीं हैं— मेरी स्वर्गीय सास, मेरे नन्दोई जिन्होंने छः महीने पहले आत्महत्या की थी और मेरी मेड जिसके बेटे की अकाल मृत्यु हुई थी। यह देख कर मैंने नींद में ही यमुना महारानी का संकल्प किया और रोते-रोते अपने पति के स्वास्थ और जीवन की प्रार्थना की।

बड़े ही रुदन के साथ सुबह 7:30 बजे मैं अपने पूजा घर में कल्कि भगवान के आगे बैठकर बहुत दुखी हुई और वहीं बिस्तर पर लेट गई। मुझे आभास हुआ जैसे कल्कि भगवान मेरे साथ में आकर लेटे हैं। बहुत सारी बाते हुईं। वह कुछ भी याद नहीं। बस इतना याद है कि मैंने रोते रोते प्रभु से कहा मैंने आपसे स्वार्थ वश नहीं दिल से प्यार किया है और यह कह कर मैंने अपने दिल पर हाथ रखा। इतना कहते ही मेरे

हृदय से हल्की नीली और सफ़ेद रंग की रोशनी निकली जिसने मुझे पूरा ढक लिया और मैं गहरी नींद में सो गई।

अनुभव —25 नवम्बर 2014 को सुबह रसोई में काम करते हुए कोई शक्ति मुझे बार-बार मेरे पति की मृत्यु की ओर आकर्षित कर रही थी लेकिन मैं एकदम अच्छा सोचने लगती थी।

मैं साक्षी हूँ कि इस दिन मैंने कल्कि भगवान और कलियुग का स्पष्ट युद्ध देखा।*

प्रतिदिन की भांति मेरे पति दस बजे दुकान चले गए। उनके सीने में दर्द उठा। मुझे बताए बिना उन्होंने पास के डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने ई.सी.जी. (ECG) करी तो वो सामान्य (ठीक) थी। डॉक्टर ने अंग्रेजी दवाई (Sorbitrate) की गोली उनके जबान के नीचे डाली और कहा कि सब ठीक है। लेकिन थोड़े समय बाद फिर मेरे पति की तबियत खराब हुई और वह पास के हस्पताल में गए। वहाँ के डॉक्टर ने ई.सी.जी.(ECG) की जो ठीक थी सो पुन: दवाई की गोली (Sorbitrate) दी और वोवरौन का इंजेक्शन (Voveren Injection) दिया जो दिल की बीमारी के लिये बहुत ज्यादा नुकसान दायक होता है और वापिस भेज दिया। जब मेरे पति गाड़ी में चले तो उनकी तबियत ज्यादा बिगड़ने लगी तब साथ में बैठे लड़के (staff) ने मुझे फोन मिलाकर मेरे पति के हाथ में थमा दिया। तब उन्होंने बताया कि मेरी तबियत खराब है। मैंने लड़के से कहा तुम तुरन्त इन्हें मैक्स अस्पताल पड़पड़गंज लेकर जाओ, मैं वहाँ पहुँचती हूँ।

साथियों, पति की ऐसी आवाज़ सुनकर मैं एक बार जोर से बिलख कर रोई क्योंकि काफी समय से मुझे इनके लिये बुरे-बुरे मौत के अनुभव आ रहे थे।

लेकिन तुरन्त ही मैंने फिर प्रत्यक्ष रूप में कल्कि भगवान को अपने साथ महसूस किया। मैं अस्पताल पहुँची तो मेरा हृदय एकदम ठहरा हुआ (हिम्मत वाला शांत)था। अस्पताल वालों ने इनकी (मेरे पति की) पुन: ई.सी.जी. (ECG) एवं इको (ECHO) किया जो बिलकुल ठीक था। लेकिन उनकी तबियत बिगड़ती ही जा रही थी। बड़ी ही असमंजस की स्थिति थी, करूं तो क्या करूं? तभी मैंने अपने भाई के जानकार डॉक्टर साकेत भारद्वाज (बी. एल. कपूर अस्पताल) के बड़े कारडियोलोजिस्ट हैं उन्हें फोन किया और सारी बात बताई। तब उन्होंने मुझे कहा कि तुरन्त ई.सी.जी. (ECG) एवं इको (ECO) की रिपोर्ट दिखाओ। हमने तुरन्त वाटसैप (watsap) के द्वारा उन्हें रिपोर्ट भेजी। तब उन्होंने कहा कि इनको हृदयपात (Heart Attack) हुआ है। इन्हें जहाँ हैं वहाँ से जरा भी न हिलाओ। उन्होंने खुद ही मैक्स अस्पताल के बड़े डॉक्टर से बात की और उसी समय मेरे पति की एन्जोग्राफी (Angiography) की गई। इस टैस्टिंग की रिपोर्ट में एक आरटरी (arterie)पूरी तरह से बंद (blocked) थी तभी हाथ की हाथ दो धागे (stent) डाले गए।

अनुभव —26 नवम्बर 2014 की सुबह मेरी सखी रमणी अग्रवाल का फोन आया कि उसने अनुभव देखा कि मेरे पति की अस्पताल से छुट्टी होने वाली है। रमणी अपने पति के साथ गाड़ी में अस्पताल के गेट के बाहर इंतजार कर रही है कि मेरे पति को सुरक्षित घर लेकर जाना है। अस्पताल की पार्किंग में एक शेर गहरी नींद में सो रहा है। शेर के चारो तरफ एक औरत चक्कर काट रही है। रमणी सोचती है कि इस शेर के जागने से पहले मुकेश जी को यहाँ से लेकर निकलना है। इस अनुभव को मैंने मामाजी को वाटसैप पे रिकार्ड करके भेजा। इसके लिये उन्होंने तुरन्त माँ बगुलामुखी और मां पार्वती की सुहाग पिटारी का संकल्प कराया।

27 नवम्बर 2014 को मेरी बड़ी बहिन निशि गर्ग को चार स्वप्न अनुभव आए—

1) शिवलिंग पर बिच्छु दिखाई दिया और वाणी अनुभव हुआ कि मेघा सुहाग पिटारी का संकल्प ले।

2) मेरे पति अस्पताल में जिस बिस्तर पर हैं, उनके सामने सफ़ेद साड़ी में एक औरत खड़ी है जिसकी मैंने दो बार उल्टी नज़र उतारी है। यह धूमावति माँ थीं जिनके भाग (शेयर) मांगने पर मैंने नज़र अंदाज कर दिया था। रमणी के अनुभव में जो औरत दिखाई दी थीं वह भी धूमावति मां थीं।

3) पंचामृत के अभिषेक से भरा हुआ एक कुआँ हैं जिसमें से मैंने थोड़ा सा पंचामृत लेकर पिया है। अर्थ- पंचामृत के अभिषेक का संकल्प, और शंकर जी से प्रार्थना कि जाने अंजाने में जो भी मेरे से भूल हुई है उसके लिये मुझे क्षमा करें।

4) 5-6 वकील दिखाई दिये जो कि बातें कर रहे हैं लेकिन दीदी सुन नहीं पा रहीं। अर्थ- कलियुग ने जो मेरी फाईल खोली है उसकी पैरवी की जा रही है ।

5) एक औरत मुझसे मेरी साड़ियाँ मांगने आई है। मैं अपनी साड़ियाँ छाँट कर अलग कर रही हूँ जिसमें रंगीन साड़ियाँ एक तरफ और हल्के रंग की साड़ियाँ एक तरफ। उपचार- इसके लिये मैंने माँ गौरा

(यहाँ मैं बता दूँ कि अस्पताल जाने से पहले मैं हनुमान जी, दुर्गा जी की योगी-योगिनियों एवं यमुना जी का उपचार करके गई थी। जब अस्पताल पहुँचकर मैंने मामाजी से फोन पर बात की और मामाजी ने ऑपरेशन वाले सात उपचार जो जुलाई 2014 और अगस्त 2014 की मासिक पत्रिका में छपे थे करने को कहा। जब ई.सी.जी. (ECG) एवं इको (ECO) की रिपोर्ट ठीक आई थी। तब हम उन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाने के बारे में सोच रहे थे। उनको हिलाना बहुत ज्यादा नुकसानदायक हो सकता था। योगमाया महारानी की कृपा से हमने दूसरे डॉक्टर से बात कर ली थी। हृदयपात (Heart Attack) होने की स्थिति में ई.सी.जी. (ECG) एवं इको (ECO) की रिपोर्ट ठीक आना एक अचम्भे की बात थी। यह मेरा बहुत बड़ा अनिष्ठ करने की कलियुग की बहुत बड़ी चाल (साजिश) थी। भगवान श्री कल्कि ने धनवन्तरी वैद्य के रूप में डॉक्टर साकेत भारद्वाज के रूप में सही रास्ता दिया और कल्कि जी के सातों उपचारों ने बड़े ऑपरेशन से बचाया। मेरे पति का छोटा सा ऑपरेशन हुआ और दो धागे (stent) डाले गए और वह खतरे से बाहर आ गए। लेकिन इसके पश्चात् भी मुझे बुरे अनुभव आने बंद नहीं हुए।)*

का साड़ी सहित सुहाग पिटारी का संकल्प लिया।

साथियों यदि मैं कल्कि जी के कहने और माँ धूमावती के मांगने पर 250 रुपये के उपचार कर देती तो इतनी बड़ी परेशानी में नहीं फँसती और ना ही साढ़े तीन लाख रुपये (मैडिक्लेम से 1,00,000 रुपए और अपने पास से 2,50,000 रु) देने पड़ते। लेकिन निरन्तर आने वाले बुरे अनुभव की वजह से मैं बहुत परेशान हुई क्योंकि उपचार करने पर भी बुरे अनुभव आने बंद नहीं हो रहे थे।

12 दिसम्बर 2014 को कल्कि साहित्य सृजन की मीटिंग जो हर दूसरे सप्ताह नोएडा प्रवेक कल्प में होती है उसके जीरो आवर्स (जब साहित्य की गूढ़ (गम्भीर) बातें जब नहीं हो रही थीं) में मैंने अपने घर की नकारात्मकता (नैगिटिविटि) और सही (पौसिटिविटि) अनुभव नहीं आने की शिकायत मामाजी से की। ध्यानावस्थित के दो तीन मिन्ट बाद मामाजी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह जो नया घर तुम्हें कल्कि भगवान की कृपा से उपचारों प्रार्थनाओं से मिला है उसका तुमने क्या पुनर्भुगतान (Repayment) किया है। इसपर मैंने कहा मैंने कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार के साहित्य का कार्य किया है। तब मामाजी ने बड़े सपाट शब्दों में कहा कि माँ धूमावति जो एक्टिवेट हुईं हैं इसके लिये तुम्हें पहले वर्ष 2010 से अब तक का अपने घर खर्च का 5 प्रतिशत का प्रति माह का शेयर एवं फ्लैट का कल्कि जी का निकालना होगा। मामाजी की यह बातें उस समय मेरी तर्क वितर्क वाली बुद्धि पर हथौड़े की तरह वार कर रही थीं। वह जो बोलते जा रहे थे मैं चुपचाप लिखती जा रही थी। घर आकर बड़े दुखी मन से कल्कि भगवान के एक लाख रुपये का संकल्प लिया। उस पर जनवरी महीने का 500 रुपय का ब्याज निकाला और रोते रोते प्रभु श्री कल्कि से कहा कि यह एक लाख रुपये मैं आपको दूंगी कैसे? यह मैं नहीं जानती। लेकिन कल्कि जी सुनलो **मैं आपकी डराने वाली भक्ति नहीं कर सकती। जो होगा देखा जाएगा। कृष्ण की भक्ति और गीता का ग्रंथ जो सबको रास्ता दे रहा है वह मुझे भी रास्ता दे देगा। मैंने सुबक सुबक के रोते हुए भगवान श्री कल्कि से कहा कि मुझे सिर्फ आपसे जवाब चाहिए मामाजी से नहीं।**

साथियों मेरे कल्कि भगवान से ज्यादा दीन बन्धु दीनानाथ कोई हो ही नहीं सकता। मेरे कल्कि भगवान ने मुझे दिलासा देने के लिए मेरे हर प्रश्न का हमेशा मुझे ही नहीं मेरे बच्चों को भी विस्तार से जवाब दिया है।

अनुभव —14 दिसम्बर 2014 कि सुबह मुझे स्वप्न अनुभव आया कि एक अस्पताल में एक बाहरी डॉक्टर ने एक औरत की सुरक्षित डिलिवरी करवाई है। उस औरत की छुट्टी भी कर दी है। अस्पताल में शोर मच जाता है कि **रजिस्ट्रेशन लेटर के बिना** कैसे डॉक्टर की एंट्री हुई और कैसे औरत बाहर गई।

फिर दिखा मैं कहीं मुहर्त में जाने के लिये तैयार हो रही हूँ। एक डॉक्टर मुझसे आकर कहता है कि क्या तुम्हें जीवन की वैल्यू का पता है? इस पर मैं कहती हूँ हाँ। तो वह रजिस्ट्रेशन लेटर मेरे हाथ में देकर कहता है कि अगर पता है तो इस पर उस डॉक्टर के साईन कराकर लाओ जिसने डिलिवरी की थी। मैं और मेरे पति फोन के द्वारा उस डॉक्टर से संपर्क करके साईन करवाकर अस्पताल में वापिस आते हैं। लेकिन अस्पताल में घुसते हुए मैंने देखा कि एक रेढ़ी(ढेला) पर एक औरत **(मां धूमावती) एक लाश लेकर रोते हुए जा रही है।** उसने रजिस्ट्रेशन लेटर अपने सामने लगाया हुआ है और कह रही है कि **यहाँ तो रजिस्ट्रेशन लेटर चलता है** इंसानों को कोई नहीं पूछता। इस पर मैं मन में कह रही हूँ कि चलो इस से तो मैं बहुत अच्छी परिस्थिति में हूँ।

अर्थ– प्रभु श्री कल्कि ने मेरे एक प्रश्न का जवाब तो दे दिया कि 25 नवम्बर को जो मेरे साथ हुआ वह उन्होंने सूली का काँटा बनाकर मुझे जिताया है।

जो अतृप्त शक्तियाँ भाग लेने के लिये सक्रिय होती हैं वह सिर्फ भाग से ही संतुष्ट होती हैं। रेहढ़ी पर लाश के साथ धूमावती माता का रोते हुए जाना यह बता रहा है कि मेरे साथ क्या दुर्घटना घट सकती थी। कल्कि भगवान ने एक लाख रुपये के फॉल्ट का 1% व घर खर्च के 5% शेयर का संकल्प (रजिस्टर) कराके शक्तियों का भाग चुकता किया है। मेरे साथ होने वाली दुर्घटना मेरे प्रभु ने कहीं और कलियुग तान्त्रिक शक्तियों पर गिरवा दी (जैसे-ARPIT (9873745909) श्री पद्म गोयल का भतीजा)*

अनुभव —15 दिसम्बर 2014 को मुझे स्वप्न अनुभव आया कि मेरे पति के सीने में दर्द हो रहा है। कुछ गलत (नेगेटिव) औरतें इन्हें घेर कर बैठी हैं जो इनको इलाज (ट्रीटमेंट) नहीं होने दे रही हैं, बातें ही बातें कर रही हैं। मुझे इनके पास जाने भी नहीं दिया जा रहा और मेरे बोलने पर चीख–चिल्ला रही हैं।

फिर दिखाई दिया कि रेहढ़ी पर डॉक्टर दुकान लगाकर बैठे हैं और कह रहे हैं कि 55 लाख में हृदय बदला (हार्ट ट्रांस्प्लांट) जाएगा और 11 लाख में शरीर (बौडी) बदला जाएगा। नर्स कहती हैं कि सर खराब शरीर (बौडी) के 11 लाख मांग रहे हो। डॉक्टर इशारे से उसे चुप रहने को कहता है।

इस पर मैं 55 लाख और 11 लाख को जोड़कर उसका 5 प्रतिशत निकालती हूँ और नर्स से कहती हूँ कि मुझे खजाने में से 350 रुपये दे दो मैं हनुमान जी के योगी योगिनियों का उपचार कर दूंगी। नर्स जहाँ मुझे लेकर जाती है यह वही मैक्स अस्पताल, पड़पड़ गंज का गेट था जहाँ 25 नवम्बर को मेरे पति को हम अस्पताल लेकर गए थे। वहीं के रुपयों की तिजोरी में से नर्स 350 रुपये मुझे देती है। सुबह जब मेरी आँख खुली तो मन घबरा रहा था।

सुबह 5 बजे मैं दोबारा सो गई और मुझे स्वप्न अनुभव आया कि

*देखें मासिक पत्रिका मास अक्टूबर 2014 का लेख कल्कि जी के उपचारों से सी.ऐ. का दूसरा ग्रुप क्लियर हुआ

हमारे घर में हर कमरे में मुझे मामाजी (स्वप्नानुभव एक सम्पदा पृष्ठ न०5 मानू मैं ना मानू से /कल्कि जी) दिखाई दे रहे हैं। मामाजी कम्प्यूटर पर मेरे साथ बैठे हैं, मामाजी रसोई में मुझे डायरेक्शन दे रहे हैं। मामाजी मेरे पति के साथ पलंग पर बैठे हैं।

* इस अनुभव ने मेरे आगे यह स्पष्ट किया ब्रहण्ड की अतृप्त शक्तियाँ किस तरह से बहुत बड़े ऑपरेशन से मेरे पति को फँसा कर मेरे जीवन से खेलने के लिए आई थी और कल्कि भगवान और उनकी शक्तियों ने किस तरह से पिछले जन्मों के 66 लाख के हिसाब की पूर्ति मात्र 350 रु में करवाई **अर्थात इस पर मोहर लगी कि जो भी रुपयों की रकम अनुभव में आती है उसका 5 प्रतिशत हनुमान जी की योगी योगिनियों का देने से बड़े-बड़े भुगतान चुक जाते हैं।** अपने हर कमरे में मामाजी का दिखना यह प्रदर्शित करता है कि मैं जो कम्प्यूटर के माध्यम से भगवान श्री कल्कि के साहित्य प्रचार का कार्य कर रही हूँ उसकी वजह से कल्कि भगवान हर क्षण मेरे/मेरे परिवार के साथ हैं लेकिन शेयर तो देना ही पड़ेगा।

साथियों सब कुछ घटित होने के बाद अब मुझे मामाजी की बात कुछ-कुछ समझ में आयी जो बार-बार कहते हैं शक्तियों का खेल समझो और मैंने श्री गुरुजी से यह खेल सीखा है चाहो तो शक्तियों का खेल खेलना मुझ से सीख लो। इनसे अपना जो चाहो काम निकाल कर ले जाओ लेकिन शेयर देना पड़ेगा।

कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है जबकि अभी महज 5090 वर्ष में भगवान श्री कल्कि उसका पलायन करके सतयुग की स्थापना करने को अवतरित हुए हैं। कलियुग का चिल्लाना भी सही है कि उसके बाल्यकाल में ही श्री कल्कि उसकी अकाल मृत्यु के लिये आ गए। लेकिन दोस्तों जब बचपन में ही उसने ऐसे रंग दिखा दिये कि जो लक्षण कल्कि जी के प्रकट होने के 4,32,000 वर्ष बाद होने थे तो पता नहीं आगे होते होते तो ऐसा होगा कि ना सांस लेने को हवा होगी न पीने को पानी न देखने को उजाला -सब तरफ त्राही-त्राही होगी।

जिस प्रकार त्रेता में श्री राम ने रीछ बंदरों पिछले जन्म के ऋषि-मुनियों, देवी-देवताओं के साथ जो वायदा किया था उनके साथ लीला की उसी प्रकार द्वापर में भगवान कृष्ण ने पांडवों के साथ ऐसे लीला की। इन पांडवों का जन्म तिरस्कार के लिए हुआ था। पिता शापित थे राज पाठ त्याग कर बनवासी हो गए थे। पाण्डव अपने पिता पांडु से उत्पन्न नहीं थे, माता कुंती ने मंत्रों द्वारा देवताओं को सिद्ध करके पाँचों पुत्रों (पाण्डवों)को प्राप्त किया था।

उनके बाल्यकाल में ही दुर्योधन और शकुनि ने लाक्षागृह में उन्हें जिन्दा जला डालने की साजिश रची थी। भगवान कृष्ण की कृपा से वे बचे। आर्यावृत की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी द्रौपदी उनकी (पांचों पांडवों की) भार्या बनी। लेकिन जब वो अति आत्म विश्वास में आए तो जुआ खेला और सारा राजपाठ गवाया, दास के रूप में अपमानित हुए एवं पत्नि का अपमान सहा। फिर 14 वर्ष घोर कष्ट उठाकर वनवासी जीवन जीया और फिर महाभारत में भगवान ने उनको साथ रखकर महाभारत का युद्ध लड़ा और धर्म की स्थापना की।

इस बार भगवान श्री कल्कि ने अपना कार्य करने के लिये वह ऋषि-मुनि-तपस्वी लिये हैं जिनके भाग्य में सुख समृद्धि वैभवता के ग्रह कमजोर हैं। पहले सिर्फ भगवान की मालाओं, संकीर्तन, एवं हवनों (अग्नि एवं जल वाले) द्वारा ही दैवी शक्तियाँ जागृत हो जाती थीं। कलियुग पर प्रहार होता था। वो कमजोर हो जाता था। भक्त को खुशियों का रास्ता मिलता था। लेकिन कलियुग ने नित्य नई चालें सोचीं और रोज-रोज नए हथकण्डे अपनाए कि वो रोज कल्कि भक्तों को नीचे गिरा सके और अपनी बुराइयों का बोलबाला समाज में फैला सके। कलियुग ने पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से हिन्दू समाज के माता-पिता एवं बच्चों के भारतीय संस्कार खत्म करके उन्हें नशे का कंचन और कामिनी का गुलाम बना दिया। अपने छोटे से सुख के लिये आज का युवा कोई भी जघन्य अपराध कर सकता है। इसी प्रकार कल्कि भगवान की शक्तियों का नया खेल आरम्भ हुआ। जैसे-जैसे कलियुग अपनी ताकत बढ़ाता गया वैसे-वैसे कल्कि भगवान स्वप्नानुभव के माध्यम से भक्तों को नए उपचार, हवन के नए तरीके, नए मंत्र, साधन देते चले जा रहे हैं। अनेक छोटे-छोटे बालक बालिका श्री कल्कि जी की अराधना से हाथ की रेखाओं और पत्री की ग्रहों को मामाजी की तरह बदलते जा रहे हैं। जिस भक्त के भाग्य में जीविका खत्म हो रही है, धन कमाने के स्त्रोत खत्म हो रहे हैं, जब वो कल्कि भगवान का नाम जाप, हवन करने लग जाता है तो अनुभवों द्वारा धन की कमी दूर करने या जीविका के स्त्रोत को पाने के नए रास्ते मिलने लग जाते हैं। तब कलियुग अपनी दुगनी शक्ति से उनपर प्रहार करने लग जाता है कि उनके पास घर कैसे आ गया, धन कैसे आ गया। उनके सुख नष्ट करने के लिए वह उनकी पापों की पुरानी फाईल लेकर आता है। लेकिन कल्कि भगवान ने स्वप्नानुभव के माध्यम से भक्तों को यह रास्ता दे दिया है कि तुम को जो मिला है मेरी आराधना, पूजा से, जाप से, हवन, सत्संग, सत्कर्मों से उन्हें नष्ट होने से बचाने के लिये मेरा शेयर दे दो इससे कलियुग की कुटिल चालें निष्फल हो जायेंगी। अब कलियुग रोज नई चालें चलता है। रोज नई शक्तियाँ भेजता है कल्कि भक्तों को सताने के लिए, मनोबल गिराने के लिये ताकि कल्कि भक्त टूट जाए और कल्कि जी की पूजा करना छोड़ दे।

युद्ध कल्कि भगवान और कलियुग का कल्कि भगवान भी रोज नई राहें सुझाते हैं अपने भक्तों को मुसीबतों से बचाने के लिये। अनुभव (स्वप्न-जागृत-वाणी-मानसिक) द्वारा कल्कि सहस्त्रनाम, दो कुण्डिय यज्ञ, कल्कि जी की मूर्ति स्थापनाओं पर मोहर, कल्कि भक्त बच्चों के लिये संस्कार शिविर आयोजित कराकर, कल्कि जी के साहित्य के नए नए रूप, सिद्ध पीठों में हवन, गंगा यमुना तट पर दो कुण्डिय यज्ञ, संभल के 68 तीर्थों पर यज्ञ करना, विभिन्न देवी

देवताओं के निमित्त नये-नये उपचार आदि यह सब कुछ कल्कि भगवान के निर्देश कल्कि भगवान के स्वप्नानुभवा द्वारा ही भक्तों को प्राप्त हो रहे हैं। उसी से कल्कि समाज कल्कि के मानने वाले श्री कल्कि भक्त निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

उन्हें साथ ही साथ निरन्तर सुख, समृद्धि, वाहन, मकान, व्यापार, वैभवता मिल रही है। उसे स्थायी बनाने के लिये मेरा हिस्सा (शेयर) देते चलो। इसी प्रकार मामाजी ने एक सत्संग में सुना था कि अपने मुनाफे (profit) में से भगवान का शेयर देने से कमाई ज्यादा बढ़ जाती है। मामाजी ने अपने लाभ (profit) में से भगवान का हिस्सा निकालने लगे। फिर भगवान ने बताया कि (profit) कब निकलेगा मुझे रोकड़ा जल्दी चाहिए। तू 1% सेल पर निकाल दे।

इसी प्रकार भगवान ने स्वप्नानुभव में बताया की झगड़े की प्रापर्टी का 5% दे दें तो तेरा काम बन जाएगा और संकल्प करने पर वास्तव में काम बन गया।

आज जो मामाजी बार-बार दिखाते हैं मेरे 8 पासपोर्ट भर गए हैं यह देख देखकर आखें थक गईं। मुझे कल्कि जी से यह मिला-यह मिला-यह मिला सुन सुनकर कान पक गए हैं।

लेकिन आज ऐसा ही मेरे साथ हुआ। जैसे ही मैंने एक लाख के ब्याज का पैसा निकाला और भगवान से कहा रास्ता दो। तो धूमावती माता वाला वह अनुभव जो आया जो लाश के साथ रेहढ़ी पर जा रही हैं इससे यह साबित और प्रमाणित हो रहा है कि मुझे जो घर मिला है जो मैं चावड़ी बाज़ार के घर से आज इन्द्रापुरम पहुँची वह मेरे भाग्य में नहीं था। मेरे कल्कि भगवान ने अपनी असीम कृपा से असम्भव स्थितियों में स्वप्न-उपचार-प्रार्थनाओं से यह घर दिलवाया है। लेकिन मैंने पूजा आराधना, साहित्य द्वारा इसे मानसिक भुगतान समझा। लेकिन मौद्रिक भुगतान जो कल्कि जी ने एक ही दिन में 15 लाख मुझे कुबेर जी से कराया उसका मैंने कुछ नहीं दिया। हालांकि मामाजी की यह भी बातें सुन सुनकर मैं विचलित हो जाती थी और सोचती थी क्या मामाजी जादूगर हैं जो कि **मुझसे शक्तियों से खेल खेलना सीख लो जो मैंने श्री गुरु जी की कृपा से सीखा है।** लेकिन मेरी बहुत बड़ी गलती थी कि मैंने कभी शान्ति से नहीं सोचना चाहा कि कैसे तान्त्रिक शक्तियों से कीले हुये तीन मुकदमों में फँसा मेरा परिवार किस प्रकार सिर्फ अनुभवों-उपचारों- और प्रार्थनाओं द्वारा चावड़ी बाज़ार के कटीले मकान से एक सुन्दर से कल्कि कृपा से स्वयं के फ्लैट में पहुँचा। तो इसी बात पर कलियुग को मौका मिला। मुझे मिले हर सुख पर कई गुना ब्याज लगाकर आज कलियुग मेरा सर्वस्व ही छीनने आ गया और समय रहते यदि मैं चेत कर कल्कि भगवान को जानती हुई हिस्सा दे देती तो मेरी भी कल्कि जी के यहाँ रजिस्ट्री हो जाती। क्योंकि कल्कि भगवान का साथ और जिस चीज में कल्कि भगवान स्वयं शामिल हो जाते हैं तब कलियुग वह चीज नहीं हड़प सकता न ही ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली निरंकुश शक्तियाँ (दसों महाविद्याएं) मुझे इतनी यातना (मानसिक, शारीरिक, आत्मिक) दे पातीं।

यही चीज बार-बार तरह-तरह से मामाजी समझाना चाह रहे थे। पहले वह स्पष्ट नहीं बोल पाते थे क्योंकि पैसे का नाम इतना बुरा है कि पैसा आते ही चीजें उलझ कर रह जाती हैं और घुमा घुमाकर कल्कि समाज को किसी नतीजे तक नहीं पहुँचने देती थी।

अपनी कमाई में सात्विक धर्माधा पहले धनी लोग ही नहीं बल्कि सभी निकालते थे जिससे धर्म के बड़े-बड़े काम होते थे। धर्मशालाएं बनती थीं, मंदिर बनते थे, भागवत कथाएं होती थीं, कुएं खुदवाए जाते थे, पशुओं को भोजन इत्यादि देने की व्यवस्था होती थी। बाद में इसमें कलियुग की कालिमा लिपटती चली गई और यह धीरे-धीरे बन्द होकर धर्म का रुपया जड़ बनकर पाप में बदलता गया। ट्रस्ट बनाए गए। ट्रस्ट में धर्म का काम करने की नीयत बेइमानी में बदल गई।

आज कलियुग के राज में कल्कि भगवान की रजिस्ट्री चलती है

भारत सरकार के टैक्स विभाग की तरह टैक्स भरो और सुख से रहो ऐसे ही भगवान का शुभ का खजाना या प्रोजेक्ट का रुपया निकालो और सुख से रहो। आप माला करते हैं, हवन करते हैं, चाहे भगवान के कार्य से अनवरत जुड़े हैं अथवा भगवान कल्कि जी तुम्हें अपने अति विशिष्ट कार्यों में माध्यम बना रहे हों बेफिक्र रहिए आपके पुण्यों के खाते में निरंतर वृद्धि होगी लेकिन सावधान रहिए कल्कि जी का शेयर निकालते रहिए इमानदारी से और अन्य शक्तियाँ आपसे अपना जो भी शेयर लेने आएं उनसे अड़िए मत उन शक्तियों को उनका शेयर देते हुए आगे बढ़ते जाइए।

मेरे इस सारे प्रकरण का यही निष्कर्ष निकला है। आखरी अनुभव में मेरे से यही कलियुगी शक्तियाँ जो विलाप करती जा रही थीं यही कहती गईं कि यहाँ तो रजिस्ट्री चलती है।

जैसे नीचे बाबू (क्लर्क) के पास से जो-जो फाईल ऊपर ऑफिसर के पास जाती रहेगी, वैसे-वैसे वहाँ-वहाँ से काम कराने के लिये रिश्वत बढ़ती चली जायेगी। ऐसा ही क्रम कलियुग की संसद का है। 20 नवम्बर 2014 को माँ धूमावती ने भाग मांगा था, तभी मैं उनको संतुष्ट कर देती तो एक महीने की इतनी लम्बी यंत्रणा से बच जाती।

कल्कि भगवान हर क्षण अपने भक्तों के साथ रहने की अनुभूति अपने हर भक्त को प्रदान कर रहे हैं। आज ही 24 दिसम्बर 2014 कोलकाता की सुश्री श्रुति सर्राफ व्याकुल भक्ता को स्वप्नानुभव में श्री कल्कि जी ने यह समझाया कि—

हर भक्त मेरे लिए खास है, मेरे दिल के पास है।
उसकी जो भी आस है, वह भी मेरे लिए खास है।

—जय श्री कल्कि

यह माननीय है बाध्य नहीं है

सबको मुझसे चाहिए
इसलिए
मुझको सबसे चाहिए

मुझे तुझसे चाहिए

कल्कि जी के शुभ का खजाना व प्रोजेक्ट की नियमावली

तुझे मुझसे चाहिए

(दोस्तों यह नियमावली माननीय सिर्फ उन साथियों के लिये है जिन्हें मेरी तरह अनुभवों (स्वप्न-वाणी-जागृत-मानसिक) पर विश्वास है। उन साथियों के लिये यह बिल्कुल भी बाध्य नहीं है जिनको अनुभवों का आधार नहीं है।

अगर हमारे हिन्दु सनातन शास्त्रों-वेदों पुराणों को 900 वर्ष मुगलों से-150 वर्ष अंग्रेजों से-27 दिन भभकती (जलती) तक्षशिला विश्व विद्यालय की अग्नि एवं 66 वर्ष काले अंग्रेजों की गुलामी से सुरक्षित रखा जाता तो 55 वर्षों से मेरे व मेरे साथियों के अनुभवों पर अधारित यह कल्कि अवतार की नियमावली देने का कोई औचित्य ही नहीं होता।

राजनीति के पितामह चाणक्य ने अपनी नीतिग्रन्थ में लिखा है कि:-

वित्तेन रक्ष्यते धर्मो विद्यायोगेन रक्ष्यते।
मृदुना रक्ष्यते भूपः सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम॥

अध्याय 5 श्लोक 9

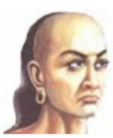

(धन से धर्म की रक्षा होती है अर्थात् धन के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पूरा नहीं होता। धन हीन धर्म की रक्षा करने में असमर्थ होता है। विवशताओं के चलते उसे कुछ ऐसे कार्य भी करने पड़ जाते हैं जो धर्म के विरुद्ध होते हैं। इसलिये धर्म की रक्षा के लिये धन अनिवार्य है।

(चाणक्य नीति एवं सूत्रसंग्रह 82)

युगावतार भगवान श्री कल्कि ने मुझे (मामाजी) अथवा अन्य कल्कि के मानने वाले भक्तों के अनुभवों (स्वप्न-जागृत-वाणी-मानसिक) में उनसे मिली सुख समृद्धि वैभवता को स्थायी रखने-कलियुग और उसके साथियों (दस महाविद्या आदि) की कुटिल चालों से बचकर निकल कर सुरक्षित (Registered) रहने के जो विभिन्न प्रकार रास्ते बताये हैं वह है श्री कल्कि जी का हिस्सा अर्थात शुभ का खजाना व उनके प्रोजेक्टों का रुपया है।)

व्यापारी प्रतिदिन अथवा मास की सेल्स का (शुभ का खजाना)*	1% **
गृहणी घर खर्च का (शुभ का खजाना)	5%
बच्चों को मिली गिफ्ट का (शुभ का खजाना)	10%
तन्ख्वहा का शुभ का खजाना	5%

—मामाजी (9811281271)

मकान/दुकान/प्लॉट/प्रापर्टी के बेचने खरीदने की (प्रोजेक्ट मनी)	1%
विवादित-झगड़ेवाले-नहीं बिक रही मकान-दुकान-प्लॉट/प्रापर्टी के बेचने खरीदने पर	5%
सामान्य शादी होने का प्रोजेक्ट मनी	1%
शादी में मुश्किलें हो तो प्रोजेक्ट मनी	2%
शादी असम्भव हो रही हो तो प्रोजेक्ट मनी	5%
गृहणी को जेवर अकारण (समान्य रूप में) मिलने पर	1%
गृहणी की जेवर चाहत जब कहन सुनन से अथवा प्रेमवार्तालाप से मिले	5%
गृहणी की जेवर की चाहत हो लेकिन आसार ही नहीं कहाँ से आएगा *** सोच अपनी अपनी	10%

कल्कि जी की चाहत
हिसाब ज्यों ज्यों बकशीश त्यों त्यों
मुझे ज्यादा नहीं हिसाब से दे दो मैं भी तो हिसाब से देता हूँ।

निष्कर्ष:-सोच बदलिये प्रभु श्री कल्कि को प्रकट होना है उन्हें प्रचार चाहिये और वह सिर्फ विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्टों से ही सम्भव है। हर प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिये बहुत हाथ चाहियें और हाथों को

हमारी धींगामस्ती

अंतर्जगत के हिसाब से हम डॉन नहीं हैं। कितने दिन तक कल्कि जी के नियमों को हम ठुकरा सकते हैं। कलियुग और उसके साथी (दस महाविद्याएं) अपना हिस्सा ले ही जाएंगे

भारत सरकार की पुलिस-विजिलेंस-सी.बी.आई

धन। इसलिये जिन-जिन कल्कि वालों के काम अड़े होते हैं भगवान अपने प्रोजेक्टों को पूरा कराने के लिये बार-बार कुबेर जी को बुलाते हैं जिससे भक्तों के रुके काम बनाकर उन्हें तो वैभवता मिलती है और कल्कि जी के प्रोजेक्ट को आगे की चाल। इससे हम उन कर्मठ कल्कि भक्तों को भी धन देकर अपने साथ जोड़ते हैं जिनके पास विचार (प्रोजेक्ट) तो हैं धन नहीं। कोशिश यही रहती हैकि जिसकी प्रोजेक्ट मनी आती है उसे अमृत कलश में मिला कर पुन: उसी भक्त को प्रचार कार्य के लिये श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन से चैक द्वारा दे दी जाती है। **शेष पृ. 10 पर**

विजया बैंक
VIJAYA BANK
A friend you can bank upon

श्री कल्कि बाल वाटिका एवं श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन में अब अंतर

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank of India
हर भारतीय का बैंक
THE BANKER TO EVERY INDIAN

—मामाजी (9811281271)

साथियों अभी तक हमें जो भी आप सबका अमूल्य योगदान मिला वह हम सन् 1989 से बैंक में जमा कराते आए हैं ताकि आपकी दी हुई दान राशि तुरन्त उस अमृत कलश में जाकर मिल जाये जिससे प्रभु श्री कल्कि की विभिन्न बाल वाटिकायें चल रही हैं। कल्कि बाल वाटिका के बालक बालिकाएं अब एक नहीं अनेक स्थानों पर सनातन संस्कार रोपण कार्यशालाएं दिल्ली ही नहीं दिल्ली के बाहर भी चला रहे हैं। इन संस्कार रोपण कार्य शालाओं का मुख्य कार्य खेल-खेल में 3 वर्ष से 11 वर्ष के देवी देवताओं, ऋषि मुनियों को श्री कल्कि जी की नमस्कार-पूजा-पाठ-हवन*-कथाएं सुनना-सुनाना, लिखना व लिखने के बाद पत्रिकाओं में उनसे नाम से छपवाना है। ड्राईंग-नाटक-भजन-नाम जाप प्रतियोगिता आदि प्रतिमास रविवार को 4 से 5 घन्टे कराना है। यहीं से शुरुआत होती है हमारे विभिन्न साहित्य सृजन की प्रतिक्रियाओं की-श्री कल्कि जी की प्रचार सामग्री-श्री कल्कि जी की भजन संध्याएं-छोटे छोटे स्टेज मंचनों से 5-6 जनवरी 2013 को साईं इंटरनेशनल में आयोजित हुए कल्कि इवेन्ट जैसे उत्सवों की।

I. श्री हनुमान जी-श्री गुरुजी की कृपा से यह बीज पौधों का रूप ले गए। आज जगह-जगह पुष्प लहरा रहे हैं। अब तो बड़े-बड़े प्रोजेक्ट सम्भालने को यह विभिन्न पौधे सक्षम हो गये हैं। ■ श्री हनुमान जी-श्री गुरु जी-श्री कल्कि जी-की कृपा से अब हम अपने उन सब साथियों को भी नई श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन में जोड़ेंगे जिन के पास कल्कि जी के प्रोजेक्टों के लिये **नये नये विचार तो है धन की कमी है**। ■ अब *जो कल्कि समाज इसमें हमें जो अनुदान देगा उसे इससे आयकर की 80 जी की छूट की व्यवस्था की जा रही है।

■ इसमें किसी भी भक्त का अनुदान आवेगा उसकी पर्ची काट कर पता, फोन नम्बर, पैन नम्बर लिखकर पैसा बैंक में जमा होने से वह रुपया जैसे ही अमृत कलश में मिलेगा उसे तभी से चमत्कारी श्री कल्कि जी से शुभ फल मिलना शुरु हो जायेंगे। श्री कल्कि के प्रोजेक्टों पर कार्य करने वालों को चैक द्वारा भुगतान होगा और वह कार्य पूरा करके जो हिसाब देंगे वह चार्टड अकाउन्टेंट द्वारा परीक्षण करके आयकर विभाग में प्रति वर्ष जायेगा। ■ जो काम प्रभु श्री कल्कि ने अब तक कुछ हाथों से लिया है:-

*** अब वह बहुत हाथों में चले जाने से कल्कि जी के कामों को चाल मिलेगी।**

*** अब यह काम कहीं रुकने वाला नहीं पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला जायेगा।**

■ **कोशिश पहले की तरह यही रहेगी:-** प्रोजेक्ट मनी में मिला रुपया एक बार अमृत कलश में मिलाकर उसमें कुछ जोड़कर या कम करके उसी भक्त को श्री कल्कि के प्रचार के लिये चैक द्वारा दे दिया जायेगा। इससे हमें भगवान श्री कल्कि के अनेक काम करने वाले हाथ मिलेंगे। उदाहरणार्थ चमत्कारी श्री कल्कि जी की बालको ने ही नहीं बालिकाओं ने भी अयोध्या-वाराही-लखनऊ-तक में जा-जाकर कल्कि जी की मूर्तियाँ स्थापित करा दीं।

■ श्री मयंक चौधरी कोलकाता ने अथक परिश्रम करके सुश्री मेघना गोयल की संरक्षता में प्रचार की राह में श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के सहयोग से 17,500 रुपए से एस एम एस द्वारा 900 कल्कि मैंबरों को बांधा।

निष्कर्ष : मानू मैं न मानू के अनुसार धर्म का रुपया आग है। बैंक में रुपया क्यों? यह धर्म का रुपया आग होता है। भगवान ने दिखाया घर में जो कोई इसे रखता है, घर में किसी भी सदस्य के कारण उपभोग होने से घर का मुखिया ही नहीं सब अपंग हो जाते हैं। (देखें स्वप्नानुभव मासिक पत्रिका 2013)

पाला उल्टा करो। इसके दो कारण हैं। जब रुपया ज्यादा इकट्ठा हो जाता है तभी झगड़े शुरु होते हैं। अनुभव में दिखाया तुम्हें (मामाजी) को आया दान का समान थोड़े समय बाद पाप में परिवर्तित होना शुरु हो गया है-इसे जल्द हटाओ। अर्थात समान तो क्या रुपया भी नहीं रोको। कल्कि जी के संस्कार रोपण, प्रचार के कार्य में लगाते चलो तो अपंग तो छोड़ो गूंगे के गुड़ की तरह गति पाओगे। अनेक भक्तों का रुपया, अनेक दस्तखतों से निकलने वाले रुपये में नीयत साफ़ रखो। ब्याज के चक्कर में पड़कर एफ.डी.(फिक्स डिपोजिट) मत कराओ। इससे दाता और कर्ता दोनों निरंतर खुशहाली की ओर बढ़ेंगे। (* देखें स्वप्नानुभव एक संपदा पृ.109 उस और इस जन्म का कर्जा चुकाने का उपाय)

पानी का हवन *— जब डॉक्टर ने मेरी बहन जी से कहा कि आँखो की वजह से आप अग्नि की लौ वाला हवन नहीं कर सकती। इस पर मैंने उन्हें पानी वाला हवन बताया यह मैंने श्री गुरु जी से पालनपुर वाले महावीर प्रसाद जी को पैसे की कमी के कारण बताते सुना था। बहन जी ने ऐसा ही किया इस पर उन्हें अनुभव में कल्कि भगवान से पुष्टि भी मिली। हम कल्कि बाल वाटिकाओं में भी बच्चों को पानी वाला हवन करवाते हैं और घर में भी करने को कहते हैं। —मामाजी

यह भगवान कल्कि जी की माया है भाई सो बोल-कबोल लिख कर रखें भाग-2 वर्ना सेठ जी की तरह मन बदल जाता है

*(पहले अंक में आपने पढ़ा कि माया किस प्रकार मनुष्य को भ्रमित करती है— * अनंत मुनि को माया ने कैसे भरमाया * दुर्योधन ने पंडित को तेल का कटोरा उल्टे हाथ से दान करते हुए मालिशिए से कहा कि अच्छा काम तुरंत कर लेना चाहिए * बोल-कबोल लिख कर रख लेनी चाहिए क्योंकि दस हजार में से 100 और एक लाख में से 1000 देना मन को नहीं खलता लेकिन करोड़ में से लाख देना मुश्किल लगता है तो उस पर भगवान ने बताया कि मन धीरे-धीरे देना चाहता है तो महज 500 रु प्रतिमास ब्याज दे दें बाकी धीरे-धीरे चुका दें। इससे निरंतर स्थाई वैभवता बनी रहेगी प्रस्तुत है इसी संदर्भ में मन की व्याकुलता कैसे कैसे मनुष्य को भ्रमित करके कलियुग को भी सोचने पर बाध्य करती है)*

—श्री अनुज रस्तोगी, ज्योतिष विशारद 9891212606

मेरी नैया पड़ी है मझधार

मेरा प्रभु जी करेंगे बेड़ा पार

एक बहुत बड़ा धनपति समुद्र यात्रा से वापस लौट रहा था। भयंकर तूफान उठा, जहाज अब डूबा तब डूबा, ऐसी हालत हो गई। पहले तो वह कोरी प्रार्थना करता रहा। लेकिन जब जिंदगी बिलकुल मौत के करीब आ गई तब उसने कहा अगर आज बच गया, अगर हे परमात्मा तूने मुझे आज बचा लिया तो मेरा जो महल राजधानी में है मैं उसे बेचकर गरीबों में बाँट दूंगा।

तूफान शांत हो गया, नाव किनारे लग गई। अब वह अमीर मुश्किल में पड़ गया। पछताने लगा कि यह तूफान तो शांत हो ही जाना था, मैं बेवजह फँस गया। लेकिन लोगों ने भी सुन लिया, उसने इतने ज़ोर से कहा था, वह भी एक गलती हो गई।

भैया सबसे बड़ा रुपैया

मकान एक रुपया

बिल्ली दस लाख

इसलिए तो लोग चुपचाप प्रार्थना करते हैं। सारे जहाज के लोगों ने सुन लिया। और लोग जहाज से उतरे नहीं कि सारे नगर में खबर फैल गई कि धनपति ने प्रार्थना की है कि उसके महल को बेच देगा और गरीबों में बाँट देगा। वह बहुत झंझट में पड़ा। बहुत सोच विचार किया। आखिर एक दिन उसने गाँव में खबर कर दी कि वह मकान बेच रहा है, जिनको भी खरीदना हो आ जाएं। 10 लाख का मकान था। बड़े खरीदार इकट्ठे हुए। बड़ा महल था। राजधानी में उससे महत्वपूर्ण कोई मकान न था। सब बड़े हैरान हुए जब उस अमीर ने घोषणा की कि यह मकान और यह बिल्ली जो दरवाज़े पर बंधी है, दोनों साथ ही बिकेंगे। बिल्ली का दाम दस लाख रुपया और मकान का दाम एक लाख रुपया, मगर दोनों साथ।

लोग बहुत हैरान हुए कि यह क्या पागलपन है? और बिल्ली का दाम कभी सुना है 10 लाख और इस मकान का दाम सिर्फ 1 रुपया। लेकिन लोगों ने कहा हमें इससे क्या प्रयोजन। खरीद्दार मिल गए। दस लाख का मकान था ही और बिल्ली भी एक रुपये की थी। इसमें कुछ ऐसी अड़चन नहीं थी। तो दस लाख में बिल्ली खरीद ली और एक रुपये में मकान।

उसने 10 लाख रुपये जेब में रख लिये और 1 रुपया गरीबों में बाँट दिया क्योंकि वह जो वचन भगवान को दे चुका था कि महल को बेचकर गरीबों में बाँट दूँगा। परमात्मा के साथ भी लोग कानूनी संबंध रखते हैं। वहाँ से भी तो रास्ता निकाल लेते हैं।

पृ. 8 का शेष..........

<u>हमें ब्राह्मणों को देना चाहिए</u> लेना तो क्या उनका खाना भी पड़े तो बेटी के यहाँ की तरह उन्हें भेंट स्वरूप रुपया देना चाहिए।

जरा शान्ति से सोचें:- शक्ति पीठों-सिद्ध पीठों-ज्योतिर्लिंगों में 7 नवम्बर 2009 से 7 नवम्बर 2014 तक 60 मूर्तियाँ चमत्कारी भगवान श्री कल्कि की लग गईं जिनका अवतार हुआ है अभी प्राकट्य शेष है। दोस्तों अगर श्री हनुमान जी, ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, चमत्कारी श्री कल्कि जी-भगवान शंकर-माँ पार्वती-माँ गंगा हमारे साथ हैं तभी तो यह सब सम्भव हो रहा है। आओ अब हम सब मिलकर ज्यादा से ज्यादा प्रचार के काम करें और प्रभु श्री कल्कि को प्रकट करें।

* बन पड़े तो शुभ के खजाने का 30% श्री कल्कि जी के साहित्य सृजन मूर्ति स्थापना में अवश्य योगदान दें अथवा कहीं भी किसी भी श्री कल्कि स्टोर से कल्कि साहित्य सामग्री खरीदकर उत्सवों जैसे जन्मदिन-सालगिरह-दीपावली-रिश्तेदारों-मन्दिरों में देवें। बचा हुआ 70% भगवान के विभिन्न कार्यों में लगायें जैसे-घी, हवन सामग्री, कल्कि जी के महोत्सवों में जाने का किराया रिक्शा-स्कूटर-कार पैट्रोल आदि। इससे आप को घर में स्वच्छता व स्वास्थय मिलेगा। डॉक्टरों -अस्पतालों का बिल कम मिलेगा, काम में चमक आवेगी।

** 1% जिन व्यवसायों में सेल्स अधिक है मुनाफा कम है वह इसे अपने हिसाब से कम कर लेवें अर्थात-.05%-.03%-.02%

*** **<u>सोच अपनी अपनी</u>** अगल-बगल के मकान में एक बनिया और एक पठान रहता था। बनिया रोज सुबह कहता था हे भगवान कैसे गुजारा होगा अभी तो महीने के कई दिन पड़े हैं और पठान जोर से बोलता था या खुदा खर्चा बढ़ा। एक दिन दोनों बाहर सड़क पर मिले। बनिये ने झेपते हुए पूछा खान साहब पूछा मेरा तो खर्चा पूरा नहीं होता और आप रोज कहते हो या खुदा खर्चा बढ़ा। इस पर पठान बोला अरे लाला जब खुदा खर्चा बढ़ायेगा तो आमदनी खुद पहले ही बढ़ायेगा देख तभी तो शान से रहता हूँ।

यही जो है जिंदगी की तरह कल्कि जी ने पैसा वसूला

—सुश्री आकांक्षा चौधरी कोलकाता

दोस्तों कल्कि जी की बोल कबोल करके यदि आप नहीं देंगे तो प्रभु कल्कि उन्हें छोड़ते नहीं है। कल्कि जी तैयार भी हों तो कलियुग हमारा पीछा नहीं छोड़ता। 32 वर्ष पहले एक फिल्म आई थी , 'यही है जिंदगी' – इस में यही चीज बहुत ही सुन्दर रूप में पर्दे पर दिखाई गई थी कि संजीव कुमार भगवान से वायदा करता है कि उसके पास पैसा आ जाएगा तो वह कृष्ण भगवान को देगा पर फिर याद रहने पर भी जान बूझ कर देना नहीं चाहता है तो भगवान किस प्रकार अपना रुपया वसूल करते हैं। जो रुपए संजीव कुमार आरती में रोकता है वो भगवान माली से वसूल लेते हैं। संजीव कुमार ने अपने माली को रुपया नरम स्वाभाव में दिया फिर भगवान बोले आखिर दिया न मेरा रुपया।

भगवान श्रीकृष्ण संजीव कुमार की नोंक–झोंक

खुश होकर माली को रुपए दिए

ऐसे ही कल्कि भक्त अपने किसी काम के लिए कल्कि जी के भाग देने की बोल–कबोल कर लेता है, पर काम हो जाने पर मन बदल जाता है और वह भगवान के भाग में कटौती करने (डण्डी मारने) के कई उत्तम तर्क ढूँढ लेता है, स्वयं को विश्वास दिलाने के लिए कि उसने जो किया सही किया। पर भगवान श्री कल्कि को कलियुग को भी जवाब देना पड़ता है, कि अमुक भक्त का यह भला क्यों हुआ इसलिये कल्कि जी 'बड़े भोले हैं, भलों के वास्ते पर खिलाड़ी हैं, खलों के वास्ते। यह समझ लो तीतरों में बाज हैं, पर भक्त की कल्कि जी रखते हैं सदा लाज हैं।' दूसरे काम ज्यादा जरूरी हैं भगवान के पास तो वैसे भी बहुत है। अब जब कलियुग परेशान करताा है तब भगवान शांत रह कर सारा खेल देखते हैं। ऐसा ही हुआ आकांक्षा चौधरी के साथ। उन्हें स्वप्नानुभव आया कि मिट्टी की मूर्ति बनवाओ। उसने कुम्हार से बात करके मिट्टी की मूर्ति बनवाई। जिसमें उनके सात हजार रुपए लगे। मैंने आकांक्षा से पूछा कि तुम्हारी पैनल्टी के कितने रुपए बनते थे इस पर आकांक्षा ने बताया कि 6800 रुपए बनते थे। इस पर मैंने कहा कि वो तो मूर्ति के रूप में भगवान ने तुमसे ले लिए। अब तुम इतने ही रुपए दुबारा निकाल कर गऊशाला भेज दो। रात को ही आकांक्षा को स्वप्नानुभव आया कि इतने नहीं दस हजार रुपए गऊशााला भेजो तभी तुम्हारी पैनल्टी पूरी होगी। इस तरह कल्कि जी ने आकांक्षा से 17 हजार रुपए वसूल कर लिया।

मामाजी को कोलकाता से मिला पार्सल

किस तरह मिट्टी की मूर्ति दिखा कर कलियुग आकांक्षा से 17 हजार रुपए ले गया। ऐसे ही विशी चौधरी ने भगवान का जितना रुपया रोका उससे डॉक्टर के रूप में ले लिया। लेकिन प्रभु कल्कि ने कोई अनिष्ट नहीं होने दिया।

इसी तरह भगवान के शेयर में से एक कल्कि भक्त ने दलाल का खर्चा काट लिया तो इस पर भगवान ने कहा कि जो उत्सव घर में होना है उसे बैंक्वट हॉल में करवाओ। यह भगवान के लेने के तरीके हैं।

बैंक्वट हॉल

किस प्रकार भगवान पुलिस के रूप में ले लेते हैं कोर्ट कचहरी के रूप में इत्यादि। बोल कबोल सोचने मात्र से शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं अत: बोल कबोल को सेठ जी की बिल्ली मकान की तरह घुमाएं नहीं। काम तो होते ही रहेंगे। बोल कबोल पूरी करने से आपके काम नहीं रूकेंगे और आप आगे बढ़ेंगे।

मैं सिर्फ कल्कि जी का हूँ, उधार की जिंदगी जी रहा हूँ

—मामाजी (9818416191)

Client Information

Cart Information

12/12/2014 - New Delhi to Kolkata - by Air

J465VV

13/12/2014 - Kolkata to New Delhi - by Air

J465VV

Price Calculation

Contact Details

Terms and Conditions

- Use the Reference Number for all correspondence with us.
- Use the Airline PNR for all correspondence directly with the Airline.
- You can carry a print-out of this e-ticket and present to the airline for check-in.
- You should carry a photo identification proof while travelling. Name on I.D. Proof should match with Booking.
- Meal Request, Seat Request, Special Request or Frequent Flier are not guaranteed.
- Flight departure is closer than 24hours please cancel/Reissue the ticket through airlines or call us on 09611633855.
- Domestic Ticket No-show/ partial used ticket refund expected between 7 to 10 working days for LCC Airlines and GDS airlines will be more than 30days.

कोलकाता से सुश्री आकांक्षा चौधरी की शादी में 12 दिसंबर 2014 को सम्मिलित होने के लिए उनके पिता श्री विनोद चौधरी द्वारा भेजा मामाजी को निमंत्रण पत्र के साथ हवाई टिकट

आदरणीय विनोद भैया व मेरे अत्यंत प्रिय विशी

आप लोग मेरे लिए बहुत ज्यादा सम्मानीय एवं महत्वपूर्ण हैं। आकांक्षा के सुखमय जीवन के लिए मैं हदय से अपने प्रभु श्री कलकि से प्रार्थना करता हूं। यदि आकांक्षा का विवाह दिल्ली में होता तो उसमें भाामिल होने में मुझे अत्यंत खु ाी मिलती लेकिन अब मैं मजबूर हूं। आपने जो कोलकाता से मुझे भाादी में बुलाने के लिए हवाई टिकट भेजा है आपके स्नेह भाव को समझते हुए मैं आप सबका आभारी हूं। पर मैं बहुत क्षमा चाहता हूं कि मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे गुरू रामकृशण परमहंस ने मुझे जो सिद्धांत दिए हैं, उनका पूर्ण रूप से पालन करते हुए ही मैं आज यहां तक पहुंचा हूं। मेरे सिद्धांत मुझे इस बात की इजाजत बिल्कुल नहीं देते मैं सिर्फ कलकि जी के कार्यों के लिए प्रतिबद्ध हूं यदि मैं इस टिकट को स्वीकार कर कोलकाता आता हूं तो मुझे अपने 1000 अन्य साथियों के उत्सव में सम्मिलित होने पता नहीं कहां कहां जाना पड़ेगा। इस दुनियादारी को निभाने में कलकि भगवान का कार्य तो बहुत पीछे छूट जाएगा अपना कार्य करने के लिए मेरे श्री कलकि ने मुझे उधार की जिंदगी दी है। मैं इसका दुरूपयोग नहीं कर सकता। आ ाा है, आप मेरी दुविधा समझोगे और मेरे प्रति आपका भावपूर्ण प्रेम ऐसा ही बना रहेगा और हम सब मिल–जुल कर एक साथ श्री कलकि के प्रचार का कार्य करते रहेंगे।

बहुत–बहुत क्षमा के साथ

आपके मामाजी

पढ़े लिखों के लिए भी

श्री कल्कि जी के अनुभव उपचार कितने सार्थक हैं

—सुश्री पारुल गुप्त (धर्म पत्नि श्री अमित गुप्त)मो॰ 9910003910

मैं सम्भ्रान्त धनाढय परिवार में पैदा हुई और बी.ए. पास कर, शादी होकर श्री कल्कि परिवार में आई। हर इंसान की तरह मुझे भी सपने आते हैं जिनको महसूस करके मैंने कभी कोई उपचार नहीं किये।

(क) ऐसा ही एक स्वप्न मार्च 2013 में मुझे आया कि मेरे पति को इन्कम टैक्स की कोई परेशानी होने वाली है। इसका मैंने कोई उपचार नहीं किया जिसे मैंने ऐसे ही सपना समझ कर छोड़ दिया। परन्तु 2 महीने बाद जब सच में इन्कम टैक्स की परेशानी आई तो मुझे अपना वही स्वप्न याद आया। तब मैंने मामाजी (ताऊजी) को अपना स्वप्न सुनाया और यह भी बताया कि कैसे कैसे हम दिक्कत में फंसे हुए हैं। उन्होंने उस परेशानी से निकलने का हमें रास्ता बताया। कमाल है कैसे श्री कल्कि जी की कृपा से हम मुसीबत से देखते ही देखते बाहर निकल गये। तब से मुझे यह समझ आया कि कल्कि के मानने वालों के लिए सपने को सपने नहीं स्वप्न अनुभव होते हैं। भविष्य में हमारे साथ जो अच्छा या बुरा होने वाला है भगवान उससे हमें अनुभवों द्वारा सचेत कर देते हैं। साथियों, इस तरह से मैं कल्कि जी के साथ जुड़ गई।

(ख) थोड़े समय के बाद फिर मेरे पति को दिखाई दिया कि हमारे घर के प्रमुख द्वार पर यमराज के दो दूत काले कपड़े पहने, हाथ में अपना हथियार लिये मेरे पति का इंतजार कर रहे हैं। वह मेरे पति को अपने साथ ले जाने के लिये आये हैं। उसी दिन मैंने मामाजी से उस अनुभव का उपचार पूछा कि उसका आई.सी.यू. उपचार उन्होंने मुझे तुरन्त बता दिया। कमाल है उसी रात मेरे पति को फिर अनुभव आया कि मेरे पति और मेरी बेटी का हाथ पकड़कर गेट के बाहर निकले हैं। यमराज के वही दोनों दूत वहाँ खड़े हैं। दूतों ने अपने हथियार से मेरे पति पर हमला किया। क्योंकि हम कल्कि जी का उपचार कर चुके थे वह हथियार मेरे पति के आर पार हो जाते हैं। उन्हें कोई नुकसान नहीं होता। मेरी बेटी अपनी उंगलियों से बंदूक सी बनाकर उन यमराज के दूतों पर गोली चलाती है और कमाल है कि वह दूत शक्तिहीन होकर गिर जाते हैं।

निष्कर्ष:- यह है श्री कल्कि जी की अनुभव लीला जो हमें अनहोनी से बचाती है।

(ग) एक ऐसा ही हवाई जहाज के हाई जैक का अनुभव जिससे मेरे साथ-साथ कल्कि के मानने वालों * को फायदा हुआ। अक्सर यात्रा पर जाने से पहले हमें अगर ऐसा अनुभव आये कि हवाई जहाज हाईजैक होने वाला है या किसी तरह की मुसीबत आने वाली है तो उपचार करने के बाद मुसीबत खत्म हो जाती है। इसमें शंकर जी का अभिषेक, अगर आपको लगता है आपके पति पर कोई भी दिक्कत आने वाली है तो 20 रुपये की सुहाग पिटारी भी पार्वती जी को चढ़ेगी। हे माँ मेरे सुहाग की रक्षा करिये। काली मां के गोले में निम्न सामग्री (11 जोड़े लौंग के, 2 इलायची, 2 सुपारी, 1 जायफल, 1 कपूर, 5 मेवा के टूकड़े) भरकर, गोले पर सतिया बनाकर और कलावा लपेटकर उन्हें अर्पित कर दो जो आसुरी शक्तियाँ हाईजैक कर रही हैं। एक जोड़ा वस्त्र-पुरुष जा रहा है तो मर्दाना वस्त्र महिला जा रही है तो जनाना वस्त्र साथ में, 1 गोला, कलावा, धूप, 1सीधा, 1 पानी की बोतल, 10 रूपये यमुना जी के हाथ लगाकर (स्वप्न अनुभव एक सम्पदा ग्रन्थ में से पृष्ठ संख्या 205 पर लिखी यमुना जी प्रार्थना न॰ 2 बोलनी है)

* इस संदर्भ में मैं यह भी बताना चाहूँगी कि सिर्फ मेरे पति ही नहीं हैं जो कल्किजी की कृपा और उनके उपचारों से इस विपदा (यात्रा के दौरान परेशानी)से बचे हैं। बलकि और भी कई कल्कि भक्तों के साथ ऐसे चमत्कार घटित हुए हैं। सुश्री रमणी अग्रवाल, जर्मन टीचर (9212216251) जो जर्मनी से भारतवर्ष आ रही थी, सुश्री रश्मि गुप्त (9873345859) जो स्विजरलैंड से भारतवर्ष आ रही थीं।

प्रचार चाहिए-प्रचार चाहिए
कल्कि जी को भी प्रगट होने के लिए प्रचार चाहिए

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वत: ॥

(गीता अध्याय-7 श्लोक-3 व्याख्या कल्याण नवंबर अंक 2014)

एल्यूमिनियम फॉयल पर छपा कल्कि भगवान का वर्ष 2015 का कलैंडर। व्यापारी अपने ग्राहकों व दोस्तों को भेंट कर पुण्य लाभ प्राप्त करें। मूल्य मात्र 15 रुपए

हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में से भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझे तत्व से जानता है। पर भक्त हैं तो सही न। नहीं की तो बात नहीं कहते। वे सदा ही रहते हैं। भगवान के भक्त न हों तो फिर भगवान की भक्ति का प्रचार कौन करे? भगवान स्वयं अपनी भक्ति का प्रचार नहीं करते। उनके सहायक रहते हैं। अपनी भक्ति का तो कोई अच्छा मनुष्य प्रचार नहीं करता, फिर भगवान तो पुरूषोत्तम हैं।

जब कल्कि जी ने आमदनी में एक प्रतिशत नहीं पाँच प्रतिशत शेयर मांगा

—सुश्री अलका गोयल (9811281271)

अति विश्वास के कारण मैंने सोचा कि मेरे साथ जो अच्छा हो रहा है यह होता ही रहेगा। इसलिये मैं कल्कि जी के उपचारों पर तो थोड़ा बहुत पैसे खर्च करती थी, लेकिन नाना–नानी एवं दादा–दादी से जो प्रापर्टी मुझे मिली, उसमें से मैंने भगवान को कोई शेयर नहीं निकाला। हालांकि मैं सत्संग में भी सुनती थी और पत्रिका में भी पढ़ती थी कि भगवान कल्कि से जो मिलता है उसका भुगतान करना पड़ता है मैंने इसकी कोई परवाह नहीं की। जिसका परिणाम यह हुआ कि जो कुछ भी मुझे कल्कि जी की कृपा से मिला था वो 6 साल में कलियुग ने कोर्ट के द्वारा खींचना शुरू कर दिया। मामले की गंभीरता को समझते हुए मैंने कल्कि अनुभव पैनल से संपर्क किया तो उन्होंने बताया कि आप सारा हिसाब लगा कर जो भगवान का शेयर बनता है उसको अभी नहीं दे सकतीं तो ब्याज देना शुरू कर दो वर्ना यह सब चला जाएगा। मैंने तुरंत ऐसा ही किया। ब्याज का रूपया जैसे ही मैंने देना शुरू किया मुझे कल्कि जी से निर्देश आने शुरू हो गए जिसमें मुझे मेरी गल्तियाँ सुधारने के लिए कहा। उसी कड़ी में मुझे यह स्वप्नानुभव आया कि मैं अपनी तनख्वाह का एक प्रतिशत नहीं 5 प्रतिशत शेयर निकालूँ। मैंने जब अनुभव का अर्थ पैनल मैंबर से पूछा तो उन्होंने कहा कि आप पिछला तो एक प्रतिशत दे दिया वो ऐसे ही रहने दो इस महीने से कल्कि जी का शुभ का रुपया अपनी तनख्वाह का पाँच प्रतिशत निकालो। मैंने ऐसा करना शुरू किया है और मुझे अनुभवों के द्वारा रास्ता मिल रहा है।

अखंड जाप वाला मंत्र बॉक्स उपलब्ध है

प्रिय साथियों, बहुत कोशिश के बाद हमें मात्र 80 मंत्र बॉक्स के आई सी प्राप्त हुए हैं जिससे हमने 80 मंत्र बॉक्स तैयार किए हैं। आपकी जानकारी के लिए मंत्र बॉक्स कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के स्थान को तेज प्रदान करने में अत्यंत सहायक व सफल सिद्ध हुए हैं। कल्कि समाज के जिन सदस्यों को घर अथवा व्यापार के लिए मंत्र बॉक्स की आवश्यकता हो इसे सूचना समझ कर मंत्र बॉक्स सुश्री संगीता अग्रवाल (9999957072) से रसीद बनवा कर ले सकते हैं। गुरु जी के शब्दों में ''मंत्र बॉक्स से निकलने वाली ध्वनि से न सिर्फ मन बल्कि आत्मा को भी बल मिलता है'' उससे कलियुग की शक्तियाँ कटती हैं और देवी शक्तियों को बल मिलता है। यहां तक कि वह शब्द ब्रह्माण्ड में जाकर अमर हो जाते हैं।

<u>मामाजी को दिखे एक स्वप्नानुभव के अनुसार—</u> किसी का तुम्हारे पास आया दान का सामान कई दिन रखा रहा तो वह पाप में बदलना शुरू हो जाता है इसे जल्दी हटाओ

आओ अब हंस लें

राजू : ऐसा क्या करना चाहिए कि हमेशा लड़कियों से घिरा रहूँ, उनसे बातें करूँ, उनकी बातें सुनूँ।

मोंटू : भाई गोलगप्पे का ठेला लगा ले।

बदलते समय में खुद भी बदलें हमें भी बदलने दें क्योंकि कल्कि नाम जपने से जो स्वप्न–जागृत–वाणी अनुभव आने शुरू होते हैं जिनसे असंभव काम संभव होते हैं इसलिए अपने अनुभव हमें वॉटस एप पर भेजें और जवाब लें

दिल्ली में– मेघना गोयल (कल्कि साहित्य से कलियुग की छावनी से निकल कर कल्कि जी की छावनी में पहुंचने के लिए–9136377829, डॉ. वी.पी.गुप्त (गंभीर रोगों के लिए)–9810000086, रेनू बंसल (उजड़े से बसने के लिए)–9818000004, संगीता गुप्त (निराशा से आशा की ओर आने के लिए)–9873137354, रश्मि गुप्त (पितृ दोष संबंधी)–9873345859, रमणी अग्रवाल (सरकार के पैसे से विदेश यात्राएं, नौकरी संबंधी)–9212216251, पारूल गुप्त (सरकारी टैक्स/यात्रा संबंधी)–9910003910 संतुष्ट न होने पर, इंदू बंसल–9818416191, मामाजी–9312533445,

कोलकाता में—वरूण चौधरी (मांगी हुई शक्तियों को जाने से रोकने के लिए)–09831089302, रश्मि गनेरीवाल (तांत्रिकों में घिरने पर)–09831273015, प्रतिभा अग्रवाल (जीवन के लिए)–09831193821, श्रुति सर्राफ (कुछ नया कर दिखाने के लिए)–09830157545, नेहा चौधरी (भीषण तनाव के लिए)–09163448228, श्रेया चौधरी (यू.एस.ए.) (अहंकार, अति आत्मविश्वास से बचने, जीवन में ऊँचाइयां पाने के लिए)+1(267)243-6643

अधिक जानकारी के लिए :श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन 1903, पहली मंजिल, चांदनी चौक, दिल्ली–6

9818416191, 9873349478 9136377829

सकारात्मक ध्यान योग व स्वप्नानुभवों का महत्व
Positive visualization and the importance of Intutions

—सुश्री रश्मि गुप्ता 09711108050 (अजय गुप्ता)

प्यारे बच्चों रोज की जिन्दगी में हमारी सोच का हम पर बहुत असर पड़ता है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही पाते हैं। मन में अच्छा सोचोगे तो अच्छा ही पाओगे। ब्रह्माण्ड (Universe) है जिस से हमारी सोच और बोल टकरा कर हमारे पास वापस आते हैं जैसे कि प्रतिध्वनि (echo)। इसलिए जो सोचो अच्छा सोचो क्योंकि वही हमारे पास आएगा। अच्छी सोच के साथ दैवीय और सकारात्मक शक्तियों का हमें साथ मिलता है और हम अपने को उनकी सुरक्षा में महसूस करते हैं।

यदि हम बुरा या नकारात्मक सोचेंगे तो हमेशा एक डर और अनिश्चितता का भय रहेगा। लगेगा जैसे हम बुरी शक्तियों से घिर गए हैं और कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है।

जब स्वप्नानुभव के द्वारा भगवान श्री कल्कि हमें आने वाली परेशानियों से सचेत करते हैं तो डरे नहीं, घबराएं नहीं, महसूस करें कि दैवीय शक्तियाँ हमारी सहायता कर रही हैं। फिर किसी से अर्थ पूछकर तुरन्त उपचार कर दें। शक्तियों को उनका भाग दें। आपको सुरक्षा मिल जाएगी। धीरे-धीरे आप पाएंगे कि आपकी सोच में आए सकारात्मक विचारों के कारण और अनुभवों को सही प्रकार से समझकर उपचार करने पर आप किसी भी तरह की परेशानी से निकल आएंगे। इसलिये "BE POSITIVE, THINK POSITIVE" खुश रहो अच्छा सोचो।

पाप से बचना है तो बेकार की बातें छोड़ कर देखें

संकलनकर्ता— सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

एक बार किसी ब्राह्मण के यहाँ कुछ साधु गए। वह ब्राह्मण भक्त था। उसने नौकर को दूसरे गाँव से दूध का घड़ा भर कर लाने के लिए कहा। नौकर गया और दूध का घड़ा लेकर आ रहा था। वह रात का जगा था जरा थक गया तो आराम करने के लिए पेड़ के नीचे सो गया। एक चील कहीं से साँप उठाकर लाई थी पेड़ पर बैठकर जब उसने सांप को खाने के लिए चोंच मारी तो साँप के मुँह में जो जहर था वह घड़े में गिर गया। अब वह बेचारा नौकर तो सोया था सो उसको कुछ नहीं पता था। वह जागा और दूध लेकर चल दिया। ब्राह्मण ने उस दूध की खीर बनाई और वह खीर खाते ही साधु चल बसे।

अब यमराज के पास जब इन चार हत्याओं का मामला पहुंचा तो यमराज ने भगवान से पूछा '' इसमें नौकर का, ब्राहाण का, चील का साँप का किसी का भी दोष नहीं तो मैं यह पाप किसके नाम लिखूँ? भगवान ने कहा '' **जो व्यर्थ ही किसी की निंदा करते हैं उनके नाम लिख दो।**

बच्चों श्री गुरु जी भी सत्संग में यह बताते थे कि बन पड़े तो जहाँ मिलकर बैठो तो बोलो काम की बात भगवान कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते की झड़ी लगा दो।

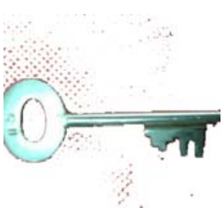

उपचारों के सफल होने में देर तो लगती है लेकिन निरंतर प्रार्थना से सफल होते हैं

—मामाजी (9136377829)

हनुमान जी के उपचार द्वारा सुश्री रश्मि गुप्ता की सासु माँ को अपने लॉकर की चाबी जैसे मिली और स्वप्नानुभव की पुस्तक से पढ़ कर सुश्री सीमा गुप्ता की माता जी को अपने बैंक के लॉकर की चाबी मिली। ऐसे ही मुझे को अपने बैंक के लॉकर की चाबी ढूँढे नहीं मिल रही थी सो उन्होंने भी हनुमान जी का प्रसाद बोल दिया। तीन चार बार प्रार्थना की लेकिन चाबी नहीं मिली जब जब तकादा आता तो मामाजी को लगता औरों को बताने का फायदा मिलता है शायद यह मुझ पर घटित नहीं होगा। अत: मामाजी ने हनुमान जी का प्रसाद चढ़ा दिया। काफी समय बाद तकादा आने पर मामाजी ने बैंक में ताला तोड़ने के लिए रुपया भी जमा करा दिया। लेकिन उस कुछ दिन उपरांत ही उन्हें घर में ही पुराना सामान छांटते हुए बैंक लॉकर की चाबी मिल गई। मन ने माना कि कमी उपचारों में नहीं मेरे विश्वास में रही। चाबी मिलने पर भी मैंने धन्यवाद नहीं किया कमाल है जिस दिन मैं बैंक जाने लगा तो चाबी फिर नहीं मिली याद आया तो हनुमान जी को धन्यवाद किया तभी चाबी 15 मिनट बाद ही मिल गई और बैंक का काम पूरा हो गया।

कल्कि साहित्य समाप्ति के कगार पर

बन पड़े तो अपने शुभ के रुपयों में से सहयोग साहित्य प्रभारियों के पास भेजें

मेघना गोयल-916377829
पूजा गुप्त-9811858723
सुषमा गोयल-9899698240
रेनू बंसल-9818000004
रश्मि गुप्त-9711108050
मामाजी-9136377829

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?—श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

अग्रोहा धाम हरियाणा में कल्कि म्यूजियम बनना शुरू इसमें हमें चाहिए आपकी अच्छी सोच एवं आपका विश्वास एवं सहयोग

अपने शुभ/धर्म में से जो भी सहयोग आप देंगे वह अमूल्य चिरकाल तक धर्म के मानने वालों को रास्ता देगा और उसकी रॉयल्टी आप सहयोग करने वालों को हमारे गुरु श्री हनुमान जी/ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में मिलेगी—

एक दान दें आप सहस्त्रदान पाने के हकदार बनें

आप अपना सहयोग चैक अथवा कैश श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के नाम से भेज सकते हैं।

रामायण भागवत की तरह रविवार 28 दिसंबर 2014 को जगह जगह कल्कि जी के तीन उत्सव आयोजित

दंगल मैदान : प्रातः 5 से 8 बजे तक कल्कि कीर्तन द्वारा कल्कि मंडल

कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ : यमुना घाट 3 प्रातः 9 बजे से द्वारा कल्कि बाल वाटिका

कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवं संचालक संचालिकाओं की मीटिंग : चांदनी चौक द्वारा कल्कि बाल वाटिका

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 4 जनवरी एवं 7 फरवरी 2015
स्थान : मामाजी बी-2, बहादुर अपार्टमन्ट, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री कल्कि बाल वाटिका:- (मामाजी)
बन पड़े तो सही आइ. सी. यू. उपचार एवं अनुभव का अर्थ जानने के लिए अपने अनुभव लिखकर डुप्लीकेट अथवा फोटो कॉपी कराकर लाएं

दिनांक : शनिवार 11 जनवरी एवं 14 फरवरी 2015
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं :
*** चादनी चौक * दिल्ली विश्वविद्यालय * नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क * रोहिणी * सब्जी मंडी, घंटाघर * सम्भल * कोलकाता * असरोही**

कल्कि जी की अखंड जोत

अपने घर व व्यापार की वैभवता के लिए श्री कल्कि विष्णु मंदिर में अखंड जोत में घी अथवा रुपए सामर्थ्य के अनुसार देने हेतु संपर्क करें : श्री राहुल अग्रवाल (9891879718)

आगामी महीनों में भगवान श्री कल्कि के महोत्सव

सम्भल में श्री कल्कि बाल वाटिका- 1 फरवरी 2015
सम्भल में कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ- 1 मार्च एवं 31 मार्च 2015

कल्कि जी का भंडारा

मात्र 500 रुपए देकर अपने अथवा अपने परिवार पर आई विपदा के लिए कल्कि विष्णु मंदिर, कुंडे वालान में अपने हाथ से फूल माला चढ़ा कर आरती करके भगवान श्री कल्कि को भोग लगाकर शाम 7 बजे प्रति बुधवार भंडारा बांटे। संपर्क : श्री योगेश गुप्ता (9311033445)

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2015-2017

publication date 28-30 january मूल्य 10 रूपए posting date1-7 january जनवरी 2015 weight-25 grams

असंभव को संभव करने वाला संभल में होने वाला श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ 4 जनवरी 2015 एवं 1 फरवरी 2015 को

7 अप्रैल 2014 को श्री राकेश अग्रवाल को दिखा कि यमुना जी पर एक तरफ हवन और एक तरफ कीर्तन हो रहा है जमुना जी में एक नाव नजर आई जो आधी लकड़ी की है आधी जल की है।

असंभव को संभव करने वाला संभल में होने वाला श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ 4 जनवरी 2015 एवं 1 फरवरी 2015 को इन्द्रपस्थ यमुना तट पर दो कुण्डीय यज्ञ संकीर्तन, सत्संग प्रात: 8 बजे से 11:30 बजे तक लघु भंडारे के रूप में होगा।

* यमुना महारानी को मर्दाना व जनाना वस्त्र, सीधा, पानी, धूप, मौली के लिये सम्पर्क करें- श्री राजेश जी-8860666461

स्थान: सागर में नैया डगमग डोले को सहारा देने वाली यमराज की बहन यमुना महारानी के घाट न०10 पर

आपके द्वारा किया जाने वाला दो कुण्डीय श्री कल्कि सहस्त्रनाम-बगलामुखी यज्ञ-संकीर्तन-भण्डारे के फल के लिये अपने हिस्से का सहयोग (सामान अथवा नगद रूपया) यमुना तीर्थ-यज्ञ-भण्डारा आयोजन में नीचे लिखे तीन प्रभारियों में से किसी को भी एवं सम्भल गंगा तीर्थ के लिये सुश्री इंदु बंसल, श्री सुनील गुप्त (सुश्री सुषमा गोयल के भाई) अथवा मामाजी को दे सकते हैं।

यमुना तट पर श्री कल्कि सहस्त्रनाम - सत्संग - संकीर्तन प्रभारी श्री अशोक-संजू गड़ोदिया- 9312539397 श्री राकेश-सुरभि अग्रवाल-9810654193 कु० अक्षय गड़ोदिया 9910006788

विशिष्ट जानकारी अथवा संतुष्ट न होने पर मामाजी 011-23973383

*** कल्कि भक्तों ने तो हिम्मत करके जो दो कुंडीय यज्ञ यमुना जी पर किया उससे दैवीय समाज को चाल मिली और दैवीय समाज ने खुले दिल से भक्तों को ऐसा निहाल किया कि उन्हें आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक परेशानियों से निकलने के रास्ते भी सूझे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यमुना नदी को गुजरात की साबरमती बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। गंगा की तरह यमुना की सफाई के लिए भी केन्द्र सरकार ने 25 करोड़ का बजट पास किया है।**

यमुना बनेगी साबरमती

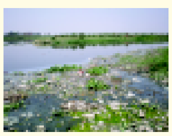

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यमुना नदी को गुजरात की साबरमती बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। गंगा की तरह यमुना की सफाई के लिए भी केन्द्र सरकार ने 25 करोड़ का बजट पास किया है।

NBT नवभारत टाइम्स

बड़े पर्दे पर पहली बार देखें, सुनें, गाएं
भगवान श्री कल्कि एवं माँ दुर्गा की चौकी

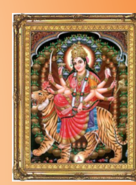

श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के तत्वाधान में श्री हर्षित गुप्त के शुभ पाणिग्रहण के सुअवसर पर श्री विजय बंसल-सुश्री इंदू बंसल द्वारा माँ दुर्गा एवं भगवान श्री कल्कि की चौकी पर पहली बार हर भजन का दृश्य रूपांतरण बड़े पर्दे पर ठाकुर की नगरी कोलकाता एवं दिल्ली के संगीतज्ञों के सुरों में

सोमवार 16 फरवरी 2015 स्थान : शांति रॉयल बैंक्वट जी.टी.करनाल रोड, दिल्ली-9

सायं 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक आरती भोग साहित रात्रि 8:40 पर प्रसादम रात्रि 9:30 बजे

☎ 9818416191 ☎ 9311033445 ☎ 9312533445

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना दिनांक 7 दिसंबर 2014 को देहरादून के प्राचीन शिव मंदिर, कम्पानी चौक, नियर रेसकोर्स में धूमधाम से संपन्न हुई।

बहन जी आपसे कल्कि भगवान ने अपने प्रचार का यह बहुत अच्छा कार्य कराया है

हाँ भैया! आज मेरी वर्षों की चाहत पूरी हुई है

श्री कल्कि बाल वाटिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें— 9312533445, 9136377829 0911858723

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी :

हर्षित गुप्त (मनु-9999885277), अंकित गड़ौदिया (9968154304)

राहुल अग्रवाल (9891879718), अलका गोयल (9811281271)

मुद्रक : ब्रह्मा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-6, आर.एस.प्रिंटर्स 40/12 गौतम नगर, नई दिल्ली-49

आगामी अंकों में

मेरे सब काम हो गए

बारह देवी-देवताओं की प्रार्थना हिंदी इंग्लिश में

-श्रेया चौधरी